VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

१६. तुलनात्मक साहित्य

डॉ. राजेंद्रसिंह चौहाण
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक, स्तानक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड.

भारतीय साहित्य की परिकल्पना और आवधारणा ही अपने आप में तुलनात्मक साहित्य की आवधारणा है। क्योंकि यहाँ एक से अधिक भाषा साहित्य के सृजन और विश्लेषण की ओर संकेत है। तुलनात्मक साहित्य, साहित्य, साहित्य का वह अध्ययन है जो एक से अधिक भाषाओं के साहित्य का अध्ययन एक साथ करता है। तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' का हिंदी अनुवाद है । ' तुलनात्मक साहित्य' पद में आए हुए, 'साहित्य' इस शब्द के अर्थ में विस्तार हुआ है । साहित्य के मूल अर्थ से हटकर अर्थात वाडमय/काव्य/साहित्य की किसी विद्या विशेष या रचनात्मक स्वरूप के लेखन से हटकर नया अर्थ लिया जाने लगा है और यह अर्थ सामग्री (Matter) के रूप में है। साहित्य-शब्द अपने विशिष्ट अर्थ को छोडकर किसी भी विषय की सामग्री के अर्थ के रूप में प्रयुक्त होने लगा है। कम्पैरेटिव लिटरेचर का अर्थ इस तरह तुलनात्मक साहित्य हो गया है। तुलनात्मक साहित्य को तुलनात्मक साहितय ही कहा जाए या तुलनात्मक अध्ययन कहा जाए यह विवाद का विषय हो सकता है। डॉ. इंद्रनाथ चौधुरी इस प्रश्न के संदर्भ में लिखते है "तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' का हिंदी अनुवाद है। एक स्वतंत्र विद्याशाखा के रूप में विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में इसके अध्ययन-अध्यापन के कार्य को आजकल विशेष महत्व दिया जा रहा है। अंग्रेजी के कवि मैथ्यू ऑर्नल्ड ने सन १८४८ में अपने एक पत्र में सबसे पहले 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' पद का प्रयोग किया था (मैथ्यू आर्नलड के पत्र १८९५, १, ९ सं.जी.डब्ल्यू ई. रसल)। परन्तु प्रारंभ में ही इसके शाब्दिक अर्थ को लेकर विवाद रहा, क्योंकि साहित्य यदि कहानीकार, कवि आदि की सृजनशील कलात्मक अभिव्यक्ति है तो वह किसी तरह भी तुलनात्मक नहीं हो सकता। हमने आज तक ऐसा कोई कवि नही देखा जो तुलनात्मक कविता, कहानी या उपन्यास लिखता हो। साहित्य की प्रत्येक कृति अपने-आप में पूर्ण होती है और साहित्य सृष्टि में कहीं दूसरे साहित्य के साथ तुलना की जरूरत नहीं होती। 'तुलनात्मक' शब्द साहित्य सृष्टि के संदर्भ में प्रयोग में नही लाया जा सकता है।"[१]

डॉ.इंद्रनाथ चौधुरीजी सब कुछ जानते हुए भी अपनी पुस्तक का नाम 'तुलनात्मक साहितय की भूमिका' ही रखते है। अंग्रेजी में आरंभ में ही भूल हुई किंतु यह प्रचलन आगे इतना बढ गया कि बाद में नाम परिवर्तन का प्रयत्न बेकार लगने लगा। जब हिंदी में यह कार्य शुरू हुआ तो हिंदी में भी उसी तरह अंग्रेजी के पद का शाब्दिक अनुवाद कर लिया गया। इसका कारण यह है कि प्रचलन में इतना बल होता है कि वह सत्य को देखकर भी अनदेखा कर देता है। तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा और स्वरूप बदलते हुए डॉ.चौधुरीजी लिखते है –

"बंगाल या आंध्र अथवा महाराष्ट्र में रहनेवाले लेखक एक ही हिंदी भाषा में साहित्य रचना करते है तो उनकी स्थानीय राजनीतिक तथा सामाजिक परिवेश से प्रभावित साहित्य में विषय-वस्तु, शैली तथा टोन में अंतर आ जाता है और उनका अध्ययन भी तुलनात्मक साहित्य की परिधि के अंतर्गत समाविष्ट हो जाता है। इस प्रकार प्रसारित नाना साहित्यों के

Scanned by CamScanner